वीतरागतास्वरूप

उत्तम क्षमावाणी पर्व

जय जिनेंद्र

मंगलाचरण—

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं।।
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्व कल्याणकारकं।
प्रधानं सर्व धर्माणाम्, जैनं जयतु शासनं।।

मंगलाचरण—

खम्मामि सव्व जीवानां,
सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु,
बैरं मज्झं ण केण वि।।

क्षमापना का अर्थ व स्वरूप समझाओ?

- क्षमापना का अर्थ– एक दूसरे के प्रति अज्ञान,प्रमाद वश मन,वचन,काय से किये गये अपराध भावों को भी समता भाव सहित क्षमा करना और क्षमा मांगना ही क्षमाभाव धारण करना।
- क्षमा भाव एक रसायन है जिससे मन के सभी विकार शांत हो जाते हैं।
- क्षमा एक महामंत्र है जिससे दुष्ट,कूर भी वश में हो जाते हैं।

क्षमापना का अर्थ व स्वरूप समझाओ?

- क्षमा मलयगिरि के चंदन के तरह है जो स्वयं शीतल रहते हुये कोधाग्नि को भी शीतल कर देता है, एवं पाषाण हृदय को को पिघला देता है। आस पास के वातावरण में धर्म की खुशबू बिखेर देता है।
- क्षमा भाव को वाणी की सीमा में नही बांधा जा सकता अंतरंग की गहराईयों से मेरे सब दोष मिथ्या हो ऐसा कहते हुये मिच्छामि दुक्कडम् कहते हैं।

मनोमालिन्य का अर्थ बतायें?

- मेरे द्वारा दूसरे के मन में उत्पन्न होने वाला विकार।

क्षमा का माहात्म्य बताओ?

- क्षमा आत्मा का धर्म है वाणी का नही
- क्रोध कषाय की मंदता में ही क्षमा मांगने या करने के विचार उत्पन्न होते हैं।
- रंग राग से मनाने का पर्व नही है अपने अंतर में निज आत्मा में प्रमादवश विकृति के परिमार्जन करने का पर्व है।

क्षमा का माहात्म्य बताओ?

- क्षमा करने कराने के सच्चे अधिकारी प्रत्येक जीव –प्रमादवश, अज्ञानतावश अपराध हुआ हो
- सच्ची क्षमा अपनी आत्मा से मांगे जिसका भान नही किया।
- क्षमा व्यक्तिगत होती है, विनम्र भाव से होती है।
- पर्वराज का उदात्त दान क्षमा है।

क्षमा का माहात्म्य बताओ?

- जबतक शत्रुता समाप्त नही, तबतक सच्ची क्षमा याचना सही नही।
- क्षमा वीरस्य भूषणं यह वीरों का आभूषण है,शत्रु भी शरण में आ जाने पर क्षमा करना चाहिये।
- मन,वचन,काय,प्रमाद,अज्ञान, जाने अनजाने में किसी को दुख दिया हो,वह अपराध है, ऐसे अपराधों से निवृत होना ही क्षमा है।
- क्षमादि धर्मो की आराधना से कषाय भावों से निवृत होना ही क्षमा है।

क्षमा का माहात्म्य बताओ?

- क्षमावाणी में क्षमा आदि दीपक शब्द है अर्थात् क्षमा से ब्रह्मचर्य तक का सार समाहित है।
- खम्मामि सव्व जीवानां.... मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ में क्रोध का त्याग, सभी जीव मुझे क्षमा करें में मान का त्याग समाहित है। सभी जीव मेंरे मित्र हैं माया का त्याग है सरलता का सूचक हैं।

वीतरागता क्षमावाणी पर्व– पं.कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री

क्षमा का माहात्म्य बताओ?

- क्षमा मांगने में जबतक मान कषाय बाधक है तबतक क्षमा वाणी नही।
- क्षमा करना सभी कहते हैं मगर क्षमा किया यह नही बोलते।
- जिस प्रकार साबुन से कपडे का मैल साफ हो जाता है उसी प्रकार क्षमायाचना से आत्मा में उत्पन्न हुये विकार साफ हो जाते हैं।

क्षमा का माहात्म्य बताओ?

- अपनी वासनाओं को, कषायों को मारना, विकारों को जीतना ही वीरता है।
- धर्मवीर ही क्षमाधारक हैं युद्धवीर नही।
- उपसर्ग की अवस्था में मुनिराज का समभाव ही क्षमा का प्रतीक है।
- जो उपसर्गों को जीते वो वीर, शत्रु मित्र को समान आशीर्वाद दे वह क्षमाधारक।
- स्वं से क्षमायाचना, स्वं को क्षमा करना ही क्षमावाणी है।

क्षमा का माहात्म्य बताओ?

- निश्चय क्षमावाणी तो स्वयं के प्रति सजग हो जाना है।
- व्यवहार से क्षमावाणी है तो आत्मा के आश्रय से क्रोधादि कषायों के उपशान्त होना ही क्षमा है।
- क्षमा हने औरों को, अरू क्रोध हने आपको।
- क्षमा बोलते समय–सत्त्वेषु मैत्री गुणेषु प्रमोदं –प्रेमभाव हो सब जीवों से, गुणी जनों में हर्ष प्रभो। ऐसा होना चाहिये।

क्षमाभाव में स्थित मुनिराजों का स्वरूप?

वर्तमान में क्षमा की अवधारणा?

.क्षमाभाव का उदा.–

अरि मित्र महल मसान कंचन,
कांच निन्दन थुति करन।
अर्घावतारन असि प्रहारन में,
सदा समता धरन।।

- क्षमापर्व को ग्रीटिंग कार्ड, पत्र तक सीमित कर दिया गया
- जिनके प्रति अपराध किया है उनसे क्षमायाचना न करके मित्रों से क्षमायाचना
- व्हाट्एप या मैसेज कर क्षमा याचना कर रहें हैं।

वीतरागता क्षमावाणी पर्व– पं.कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री

क्षमाभाव याचना–

विगत वर्ष में प्रमादवश हुई हो, हमसे कोई भूल।
क्षमा सुमन वरसायें आत्मन्, चिर करूणा के मूल।।

- जी दुखाया आपका ही, जान अनजान में।
  या कहे हों दुर्वचन ही, भूलकर अभिमान में।।
  वीर का भूषण क्षमा है, वह मुझे भी दीजिये।
  मैल मन का धुल सके, वह स्नेह वृष्टि कीजिये।।

जय जिनेंद्र

पं.कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री
जैनदर्शनाचार्य,से.नि. सहा.निदेशक
14/214 मुक्ताप्रसाद नगर
बीकानेर राज.9460674306